साइंस कांग्रेस में अज्ञान और अन्धविश्वास सर चढ़ कर बोले.....

क्या आश्चर्य विश्व पुस्तक मेले में भी अज्ञान और अंधविश्वास ही धड़ल्ले से बिके

ग्राउंड जीरो से विवेक की विशेष रिपोर्ट

पंडित विजयशंकर मेहता के आत्मा से परमात्मा के मिलन के सूत्र को फोन पर उनकी ही वाणी में सुनने के लिए जेकेआर टाइप करके आप 9200001164 पर भेज दें। इसी के साथ हम अपने अगले वक्ता को आमंत्रित करते हैं। इत्यादि-इत्यादि ही चल रहा है विश्व पुस्तक मेले में।

कैसे-कैसे कार्यक्रमों से भरा पड़ा है दिल्ली का विश्व पुस्तक मेला 2019 (5-13 जनवरी)? झलक देखिये- माया यानी जादू की; आध्यात्मिक जगत में इसे अन्धकार भी कहते हैं। जिन्दगी में माया आती है तो जो सही होता है वही दिखना बंद हो जाता है। फिर इंसान गलती कर बैठता है या जीवन के गलत निर्णय ले लेता है। पुस्तक मेला की भी कुछ ऐसी ही बानगी।

लंका के युद्ध में शाम हो जाने पर जब वानर लौट आये और राक्षसों ने फिर हमला कर दिया और उन्होंने ऐसी माया रची कि वानर परेशान हो गए। श्रीराम ने हनुमान और अंगद से कहा कि जाओ और बंदरों का हौंसला बढाओ। प्रभु राम समझ गए थे कि माया का जो जाल असुरों ने फैलाया है वो सिर्फ हनुमान और अंगद से नहीं हटेगा। तब उन्होंने धनुष उठाया और इस दृश्य पर तुलसीदास ने लिखा-

पुनि कृपाल हंसी चाप चढ़ावा। पावक सायक सपदि चलावा।

भयउ प्रकास कतहूँ तम नाहीं। ज्ञान उदय जिमि संसय नाहीं।।

अर्थात, रामजी ने हंसते हुए अग्निबांण चलाया जिससे सब अँधेरा हट गया। इसी प्रकार जीवन में जब भी अन्धकार हो तो आप सब भी परमात्मा का स्मरण करें सारे दु:ख दूर होंगे।

भाई ये दृष्टि वालों की मैगजीन ले ले करंट अफेयर वाली। बहुत बढ़िया छापते हैं, पिछले आईएएस के टेस्ट में 37 प्रश्न इसी मैगजीन से आये थे। पुस्तक मेले में आये युवाओं ने ज्यों ही हाल नंबर 12ए में कदम रखे, दायें हाथ का भव्य स्टाल दृष्टि प्रकशन का है। अपनी आईएएस कोचिंग के लिए विख्यात ये संस्थान अपनी जेब काटू फीस के चलते हिंदी भाषियों में अब कुख्यात होने लगा है। खैर अपनी साख को ढाल बनाए हुए यह संस्थान मेले में आईएएस बनने का सपना लिए आये युवायों को किताबें पकड़ा रहा है।

मेले का कद अबकी बार ऐसा नहीं है भाई साहब जैसा हुआ करता था। स्टाल नंबर 161 संवाद प्रकाशन पर अपनी किताबों को सहेजते हुए एक भद्र पुरुष ने कहा। हमने पूछा, क्यों अब ऐसा क्या हो गया? उन्होंने बताया कि एक तो कंस्ट्रक्शन वर्क के कारण मेला पहले ही महज 4 से 5 हॉल में सिमट आ गया है। ऊपर से ठण्ड का प्रकोप भी है। ऐसे में जनता घर से नहीं निकलती।

पिछली बार के मुकाबले मेला कुछ फीका है और सच कहें तो साल दर साल मेला फीका ही होता जा रहा है। हॉल नंबर 12ए में स्टाल संख्या 11 अनुज्ञा प्रकाशन के मालिक 55 वर्षीय सुधीर वत्स ने अनमने मन से कहा। कारण पूछने पर उन्होंने कहा कि ये हमसे न पूछिए बल्कि मेले में बिकने वाली किताबों और होने वाले कार्यक्रमों पर न ?र डालिए, कारण समझ आ जाएगा।

दलित चिंतन के मशहूर लेखक कंवल भारती, मेले में आने वाले लोगों की घटती संख्या और दुकानदारों की बिक्री सम्बन्धी समस्या पर पूछने पर अपने चिर-परिचित अंदाज में कहकते हुए बोले, कैसे आये मेले में कोई? एक भी सुसरी रेल ऐसी नहीं है जिसमे कन्फर्म टिकट मिल सके। हम जैसे लोग जो रामपुर और दूर- दराज के इलाकों से पहले आया करते थे वो अब

सिर्फ इसलिए नहीं आ पाते क्योंकि कन्फर्म सीट ही नहीं मिल पाती।

पहले मेला फरवरी माह में हुआ करता था तब तक सर्दी का असर काफी कम हो चुका होता था। जबसे भाजपा सरकार आई है, तबसे ये मेला जनवरी में लगना शुरू हो गया ताकि सर्दी के कारण पढने लिखने वाले कम से कम लोग ही आये और ये संघी अपना गाय और गोबर फैलाते रहें। मेला होता है पुस्तकप्रेमियों के लिए, अब न तो मेला इस बात को ध्यान में रख कर लगाया जाता है न ही पुस्तकों के प्रेमी बचेंगे। क्यों नहीं बचेंगे पुस्तक प्रेमी? इसपर भारती ने कहा कि किसी को प्रेम करने के लिए उसका होना जरूरी है। घूमो मेले को ठीक से और हर हॉल के ऑथर कार्नर पर जा कर उनके प्रोग्राम देखिये तब समझेंगे आप। नमस्कार।

आधार प्रकाशन पंचकुला के स्टाल पर बैठे लेखकों और पाठकों की मंडली से बात करने पर उन्होंने कहा कि देखो भाई पुस्तक मेला तो चलता था बाहर से आये लोगों से। अब इतनी कड़ाके की सर्दी के मौसम में होने लगा है मेला कि कोई आ नहीं पाता और जो आने की हिम्मत जुटा पाते हैं उनको भारतीय रेल आने नहीं देती। कोई भी गाड़ी नहीं जो वक्त से पहुँच जाए, आजकल तो चलो कोहरे का बहाना है पर गर्मियों में भी यही हाल है अब तो हर गाड़ी का। और इतने सबके बाद मेले का स्वरूप भी तो देख लो यार एक बार कि कैसे-कैसे कार्यक्रम हो रहे हैं। सभी कार्यक्रम सिर्फ पुराणों और ईश्वरों की भक्ति से ओत-प्रोत मिलेंगे।

मेले में होने वाले कार्यक्रमों में एक के बाद एक तिलकधारी और टीकाधारियों से ज्ञान पाने के बाद पता चला कि ज्ञान क्या है इसे बताने का जिम्मा आ पड़ा था हिप्पी से दिखने वाले पुराने फिल्मों के खलनायक रंजीत पर। भगवान् पर अपना असीम विश्वास और प्रेम बताने के साथ ही सबसे विदा लेते हुए ज्यों ही रंजीत ने स्टेज छोड़ा हाथ में दृष्टि प्रकाशन से प्रकाशित करंटअफेयर्स की किताब तेजी से झोले में डालते हुए भविष्य के आईएएस युवाओं ने सेल्फी लेने को अपने कैमरा तान लिये और जूनून ऐसा कि धक्का-मुक्की कर अपने सफेद-पीले दांतों को फ्रेम में ले ही आये।

प्रकाशक किताबें बेच रहा है पर पाठक क्या खरीदे इसकी कवायदें राजनैतिक गलियारों में धर्म संसद करके तय की जा रही हैं। सच ही है कि जब अन्धकार बढेगा तो दिखना बंद हो जाएगा और इसीलिए शायद पुस्तक मेले में भी पाठक की संख्या दिखनी कम हो रही है। जहाँ ज्ञान और विज्ञानं को तर्क की कसौटी पर तौलना चाहिए वहाँ भक्ति भाव ही परोसा जा रहा है। हो भी क्यों नहीं जब इसका जिम्मा भी बाईस सौ करोड़ खर्च कर देश-विशेष की खाक छानते देश के प्रधानमन्त्री नरेंद्र मोदी ने खुद जो उठाया हुआ है।

पुस्तक मेले के सामानांतर, फगवाड़ा की लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी में आयोजित 106वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस में कुछ मोदी भक्त वैज्ञानिकों ने पुराणों के दावों को विज्ञान बताकर इतने महत्वपूर्ण आयोजन की गंभीरता को हास्यास्पद बना दिया। आंध्र यूनिवर्सिटी के कुलपति 'जी नागेश्वर राव' ने यह कहकर कि कौरव टेस्ट ट्यूब बेबी थे, रावण के पास 24 प्रकार के विमान थे और राम के पास गाइडेड मिसाइल थीं, सभी के साथ-साथ कार्यक्रम में शामिल नोबेल से सम्मानित तीन वैज्ञानिक प्रोफेसर एव्रम हेर्शाको, थॉमस सुदौड़ और प्रोफेसर डेकन हल्दाने को भी सोचने पर मजबूर कर दिया होगा कि क्या नोबेल के असली हकदार वे हैं भी या नहीं?

अकार्बनिक रसायन के प्रोफेसर राव से जब उनके दावे का प्रमाण माँगा गया तो बोले इतिहास ही प्रमाण है। अब ऐसे सड़क छाप कुलपतियों से किस ज्ञान की उम्मीद की जाए जो इतिहास को विज्ञान से अलग मानते हैं। या जिनको ये समझ नहीं कि अतीत के मिथकों से निकालकर कुछ भी कह देना इतिहास नहीं हो जाता। इतिहास को भी विज्ञान की तरह तर्क और सत्यता की कसौटी पर खरा उतरना होता है।

तमिलनाडु के अलियार में वर्ल्ड कम्यूनिटी सेंटर के शोधकर्ता कन्नन जेगाथाला कृष्णन ने तो आइन्स्टाइन, न्यूटन और स्टीफंस हाकिंस सभी को खारिज करते हुए कहा कि अकेले उनके शोध में भौतिक विज्ञान के सभी सवालों के जवाब हैं। इसी प्रकार पंजाब विश्वविद्यालय की भूगर्भ विज्ञान की प्रोफेसर आशु खोसला ने बेहद हास्यास्पद दावा किया कि ब्रह्मा को डायनासोर के बारे में बहुत पहले से पता था। इतने प्रतिष्ठित कार्यक्रम में भी अतार्किक और अवैज्ञानिक बातें किये जाने का आधार स्वयं प्रधानमंत्री मोदी ने अपने मुखारविंद से 2014 में आयोजित विज्ञान कांग्रेस में रखा था। तब मोदी ने कहा था कि एक छोटे बालक गणेश का सिर काट कर उसकी जगह हाथी का सिर लगाना कोई मामूली बात नहीं, क्या ये बिना सर्जरी के संभव हो सकता था? नहीं, मोदी जी ये तो आजतक आपकी विज्ञानं कांग्रेस में भी संभव नहीं हो सका है। रही सही कसर आपके शासन में होने वाले पुस्तक मेले पूरी कर रहे हैं जिनमें वैज्ञानिकता को चमत्कारों से ढंका जा रहा है।

फिलहाल, नोडी राज के इन अनर्गल दावों का अखिल कर्नाटक विचारवादिगाला और ब्रेकथ्रू साइंस सोसाइटी जैसे संगठनो ने कड़ा विरोध किया है। उन लोगों को यह चिंता है कि इन निराधार दावों से प्राचीन भारत की चिकित्सा, धातुकर्म, और गणित की वास्तविक वैज्ञानिक उपलब्धियों की चमक खो जाती है और भारतीय वैज्ञानिकों की साख को धक्का भी लगता है। मिथक और विज्ञान को मिलाने की यह परियोजना आरएसएस से प्रेरित है और उसकी जड़ों में एक प्रकार की हीनताग्रंथि है। ये हीनता बोध यूरोप और अमेरिका के सारे शोध प्रबंधों को भारत की नकल बताकर संतुष्ट हो जाना चाहता है। इस तरह के दावे उन तमाम वैज्ञानिको की मेहनत पर पानी फेर देते हैं जो आधुनिक काल में मौलिक शोध में लगे हैं।

इस बीच आईएएस बनाने की किताबें लिए युवा, 'दृष्टि' के ठीक सामने लगे 'गीताप्रेस' गोरखपुर में पंडित विजयशंकर के बांचे ज्ञान को आत्मसात करते हुए धार्मिक किताबों पर दोगुना खर्च कर रहे हैं और खुशी की खबर ये है कि हनुमान चालीसा मुफ्त मिल रही है। तभी मंच पर श्री-श्री 1008 स्वामी अच्युतानंद आ चुके हैं और बता रहे हैं...

कुम्भ वो स्थान है जहाँ स्नान से सारे पाप खत्म होते हैं। जो कुम्भ जाएगा वो पुण्य कमायेगा। श्रवण कुमार से सीखना होगा आज के हर भारतीय युवा को और लेकर जाने का संकल्प उठाना होगा अपने माता पिता को इस बार के कुम्भ में। इस बार का कुम्भ सिर्फ कुम्भ नहीं धर्म की लड़ाई है। वही धर्म जिसपर इस्लाम की नजर है और हजारों साल से ये पश्चिम वाले जिसे अपने तथाकथित फैशन तले रौंदते रहने का प्रयत्न कर रहे हैं। आज का जो यूरोप और अमेरिका है वो भारत से ज्ञान लेकर ही ऐसा बना वरना ये हमारे समक्ष तुच्छ थे और हैं। अब समय आ गया है कि धर्म को बचाया जाए और इसकी पहल मोदी जी ने 10 प्रतिशत आर्थिक आधार पर आरक्षण सवर्णों को देकर शुरू कर दी है।

युवाओं की तालियों से हॉल गूँज उठा और कुछ ये कहते निकले की यार जब नौकरी ही नहीं है तो आरक्षण से क्या होगा? मेला समाप्ति की ओर है, पर सिर्फ मेला। ऐसे मेलों में जो कचरा फैलाया जाता है उसका असल असर भविष्य में सामने होगा जहाँ भीड़ मेले में किताबें लेने नहीं आती बल्कि सड़कों पर मासूमों का खून बहाती है।

आईएएस बनाने की किताबें लिए युवा, 'दृष्टि' के ठीक सामने लगे 'गीताप्रेस' गोरखपुर में पंडित विजयशंकर के बांचे ज्ञान को आत्मसात करते हुए धार्मिक किताबों पर दोगुना खर्च कर रहे हैं और खुशी की खबर ये है कि हनुमान चालीसा मुफ्त मिल रही है। तभी मंच पर श्री-श्री 1008 स्वामी अच्युतानंद आ चुके हैं ...